कर्नाटक

जैविक देश

क्यूबा विश्व में 100 प्रतिशत जैविक देश है.

प्रथम

आस्ट्रेलिया 10,500,000 हेक्टेयर में जैविक खेती कर विश्व में आज प्रथम है. ओस्ट्रेलिया अपनी कुल भूमि का मात्र 2.31 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

द्वितीय

अर्जेन्टीना 3192000 हेक्टेयर में जैविक खेती करके दूसरे है. अर्जेंटीना मात्र 1.89 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

तृतीय

इटली 1230000 हेक्टेयर में खेती करके तीसरे है. इटली 7.94 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

चौथा

अमेरिका 9,50,000 हेक्टेयर में खेती करके चौथे है. अमेरिका 0.23 प्रतिशत ही जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है. अमेरिका के पास में 936 मिलियन हेक्टेयर में से 177 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ भूमि है. अमेरिका में 90,000 केचुआ फार्म कार्यशील हैं और जापान को हजारो डालर के केचुए निर्यात किये गये हैं. अमेरिका वर्मी कल्चर का उपयोग मलमूत्र अवमल तथा कार्बनिक पदार्थों को पुनः चक्रित करने का कार्य व्यवसायिक स्तर पर किया जा रहा है.

अमेरिका में अक्तूबर 1980 से अग्निहोत्र कृषि का कार्य प्रारम्भ किया गया था. 17 एकड़ भूमि पर अग्निहोत्र कृषि का कार्य प्रारम्भ किया गया था.

सेम

सेम की फसल पर अग्निहोत्र कृषि का प्रयोग सबसे पहले किया गया था. श्रीमती जेरी होजेस के द्वारा प्रयोग करने के बाद में पाया गया कि 12 गुना 16 फुट की कुटिया में 4 घंटे अग्निहोत्र हवन करने के बाद में 1989-90 में प्रति 100 वर्गफूट भूमि पर सेम की फसल 43.75 पांउड हुई थी.

रासायनिक खाद की तुलना में वृद्धि

रासायनिक खाद की तुलना में अग्निहोत्र कृषि करने पर 961 प्रतिशत वृद्धि हुई थी. अमेरिका में अग्निहोत्र कृषि पर अनुसंधान करने के लिए हर साल बहुत ही अधिक धन खर्च किया जाता है.

अग्निहोत्र विश्वविद्यालय

अमेरिका में अग्निहोत्र पर गहन अनुसंधान करने के लिए अग्निहोत्र विश्वविद्यालय प्रारम्भ किया गया है. अमेरिका में 4 घंटे महामृत्युंजय यज्ञ हर दिन किया जाता है.

पांचवा

ब्रिटेन 479631 हेक्टेयर में खेती करके पांचवे है. ब्रिटेन 3.96 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

छठवा

उरुग्वे 678481 हेक्टेयर में खेती करके छठवे है. उरुग्वे 4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

सातवा

जर्मनी 632165 हेक्टेयर में खेती करके सातवे है. जर्मनी 3.7 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. जर्मनी में 2001 में जैविक खेती 2 प्रतिशत की जाती थी जो आज 7 प्रतिशत की जा रही है.

1974 से ही भारत से अग्निहोत्र को पूरी तरह से समझकर अग्निहोत्र पर बहुत ही गहराई से अनुसंधान कर विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर चुका है.

पश्चिमी जर्मनी बोडेन्सी संभाग की फार्मास्यूटिकल्स रिसर्च इंस्टीटयूट की प्रमुख श्रीमती मोनिका येले तथा उनके पति श्री बर्थोल्ड येले के द्वारा लगातार अनुसंधान करने के बाद में महत्वपूर्ण निर्णय लिए थे. जर्मनी ने अग्निहोत्र के लिए बहुत अधिक खर्च किया है. रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के लगातार प्रयोगों के कारण स्वास्थय पर गंभीर प्रभाव के कारण ही जर्मनी बहुत अधिक परेशान था.

अग्निहोत्र की भस्म का दवा के रुप में प्रयोग भी जर्मनी ने ही विश्व को बताया था. अग्निहोत्र करने की पूरी प्रक्रिया को भी जर्मनी ने सबसे पहले पूरी तरह से समझने का प्रयत्न किया था. अग्निहोत्र की प्रदू-णरोधी क्षमता का अध्ययन कर विश्व के सामने आश्चर्यजनक परिणाम दिखाये. अग्निहोत्र की भस्म का वैज्ञानिक परीक्षण कर अग्निहोत्र भस्म के रोगप्रतिरोधक गुणों को विश्व को बताया था. सबसे पहले जर्मनी ने अग्निहोत्र के गुणों को अच्छी तरह से परखा था. अग्निहोत्र कृ-ि अग्निहोत्र की भस्म से ही की जाती है इसलिए अग्निहोत्र कृ-ि करने के लिए जर्मनी ने वैज्ञानिक आधार तैयार किया था.

आठवा

स्पेन 485079 हेक्टेयर में खेती करके आठवे है. स्पेन 1.66 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

नौवा

कनाडा 430600 हेक्टेयर में खेती करके नवें है. कनाडा 0.58 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

निर्यात

कनाडा अमेरिका को 30,000 डालर के केचुओं का निर्यात हर साल करता है.

दसवा

फ्रांस 419750 हेक्टेयर में खेती करके दसवें है. फ्रांस 1.4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

25 प्रतिशत जैविक कृ-ि

डेनमार्क में जैविक खेती के फार्मों की संख्या 1989 में मात्र 401 थी जो 2005 में बढ़कर 9300 हो गयी है. आज कुल कृषि का 25 प्रतिशत भाग जैविक खेती के द्वारा किया जाता है.

जापान

जापान 15,000 टन जीवित केचुआ ईल मछली के संवर्धन के लिये आयात करता है. जापान 15,000 टन केचुआ कागज एवं धागा मिलों के व्यर्थ को पुनः चक्रित करने हेतु आयात करता है.

रुस

इस समय रुस के पास 1708 मिलियन में से मात्र 126 मिलियन हेक्टेयर भूमि ही उपजाउ है. बाकी बंजर या बर्फीली है.

चीन

चीन के पास 960 मिलियन हेक्टेयर में से 124 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ है.

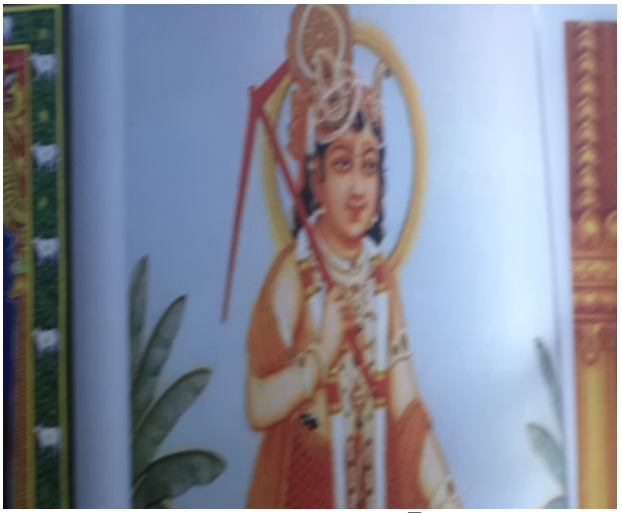

100 प्रतिशत जैविक राज्य

सिक्किम की तरह ही जैविक बोर्ड की स्थापना करने के लिए संगठित प्रयत्न जारी हैं. विश्व में जैविक लहर उत्पन्न होने के कारण 100 प्रतिशत जैविक राज्य बनाने के लिए रुपरेखा बन रही है.

कर्नाटक में 1700 के आसपास मुसलमान राजा हैदरअली के द्वारा 60,000 अमृतमहाल गोवंश का संवर्धन किया गया था. मुसलमान राजा का गोपालन हिंदुओं के लिए आदर्श था.

अमृतमहाल यानी दूध का घर ऐसा हैदरअली के द्वारा माना जाता था. अमृतमहाल नस्ल के बैल तेज गति के लिए हैदरअली के राज्य में बहुत ही प्रसिद्ध थे.

अमृतमहाल नस्ल के बैल 100 मील की दूरी ढाई दिनों में तय करते थे. अमृतमहाल नस्ल के बैल अपने कार्य के अनुसार 3 भागों में बाटे गये थे. गन पैक बैल तोप को लेकर उबड़ खाबड़ रास्तों पर सवायी चाल से बिना रुके चलते थे.

अंग्रेजों के द्वारा कर्नाटक राज्य पर कब्जा करने के बाद में अमृतमहाल नस्ल के पतन के बाद इजीप्ट के पाशा के द्वारा अमृतमहाल नस्ल को सुरक्षित रखा गया है. 1813 तक कर्नाटक में हैदरअली के परिवार के द्वारा अमृतमहाल नस्ल को सुरक्षित रखा गया था. हैदरअली के बाद में टीपू सुलतान के द्वारा अमृतमहाल नस्ल को सुरक्षित रखा गया था.

1398 टन

कर्नाटक में सरकार के द्वारा विश्व के कई देशों से संकर नस्ल के सांढों का वीर्य आयातित कर हमारी देशी नस्ल को संकर नस्ल में परिवर्तित कर दिया गया है.

16,02,000 संकर नस्ल की गायों से 1398 टन दूध उत्पादन हो रहा है.

1070 टन

633 लाइसेंस प्राप्त कतलखानों के कारण वर्तमान समय में 79,36,000 देशी नस्ल की गायों से मात्र 1070 टन दूध का उत्पादन किया गया है.

1350 टन

भैंस को बढ़ावा

विश्व में कई देशों में भैंस नहीं है. गाय प्रत्येक देश में मौजूद है.

भैंस की सहन करने की शक्ति कम होती है. गरमी में भेंस पानी में रहना पसंद करती है.

भैंस को अधिक पानी की आवश्यकता होती है. भैंस गंदगी पसंद करती है. भैंस कीचड़ में लेटना पसंद करती है.

विश्व में यदि भैंस है तो भैंस का दूध पीना कोई भी पसंद नहीं करता है.

भैंस यानी महि-ा यानी असुर यानी राक्षस. भैंसा यानी मृत्यु. मृत्यु के देवता यमराज भैंसें पर सवारी करते हैं.

भैंस के दूध पीने के कारण मानव के रक्त में गाढ़ापन बढ़ जाता है जिसके कारण कब्ज की परेशानी प्रारम्भ होती हे जो बाद में बहुत सारी गंभीर बीमारियों में रुपान्तरित होती हैं.

भैंस हमेशा गुस्से में रहती है तथा मानव को गुस्से में पटक देती है. भैंस के दूध पीने के कारण ही मानव के अंदर हिंसा की वृति चरम सीमा तक पहुंच जाती है.

भैंस के कारण हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है. भैंस स्वार्थी होती है तथा भैंस आलसी होती है. मानव भैंस का दूध पीकर स्वार्थी तथा आलसी हो जाता है.

कर्नाटक में कलियुग में सरकार के द्वारा भैंस के पालन को बहुत ही बढ़ावा दिया जा रहा है.

भारत में वसा के आधार पर दूध का मूल्य तय करने के कारण ही भैंस को बढ़ावा मिल रहा है.

वर्तमान में कर्नाटक में भैंस का दूध 80 से 100 रु. लिटर तक दूध बिक रहा है.

भैंस के दूध में न्यूनतम 7 प्रतिशत वसा होती है. अधिकतम 13 प्रतिशत तक वसा होती है

भैंस से 1350 टन दूध उत्पादन हो रहा है.

39 टन

बकरी से आधे खर्च में केरल की वेचूर गोवंश पल रही है.

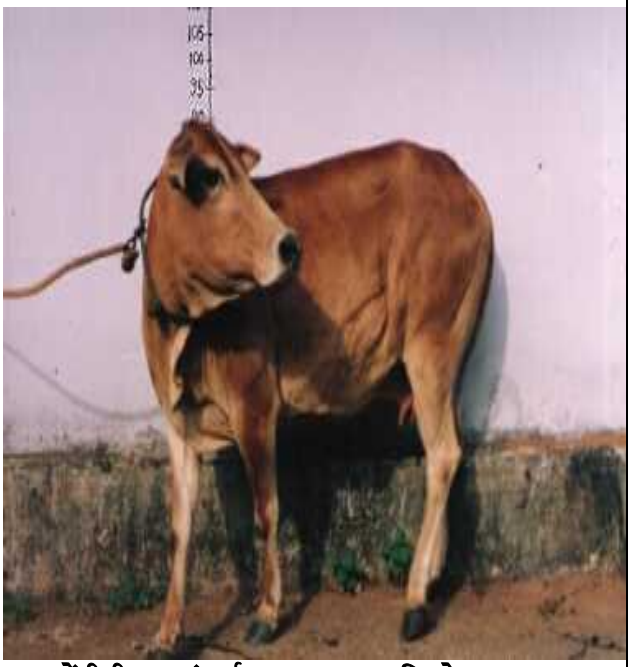

91 सेंटीमीटर उंचाई तथा 100 किलोग्राम वजन की वेचूर गाय मात्र 1 किलो 24 धंटे में खाती है.

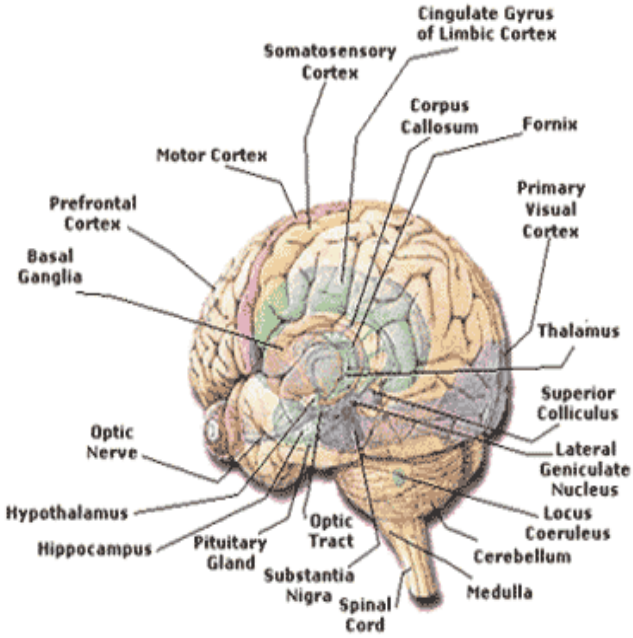

रोग प्रतिरोधक क्षमता वैचूर की सबसे अधिक है. बीमार तथा बच्चों को वैचूर का दूध सबसे अच्छा है.

बकरी चोर होती है इसलिए बकरी के दूध पीने वाले के अंदर भी चोरी के गुण उत्पन्न होते हें.

बकरी से 39 टन दूध उत्पादन है.

कुल 3857 टन दूध उत्पादन में बढ़कर गिर रहा है वर्तमान में दूध उत्पादन में कर्नाटक राज्य भारत में 12 वें तक नीचे है तथा प्रथम आने के लिए कर्नाटक में जबरदस्त तैयारियां की गयी हैं.

गो सेवा आयोग

वर्तमान में 80 लाख गोवंश के विकास करने के लिए सरकार 410 उद्यानिकी फर्मो के माध्यम से 15,732 एकड़ भूमि पर जैविक खेती करेगी.

देशी गायों की सुरक्षा और उनके संरक्षण के लिए राज्य सरकार ने विशे-ा रुचि लेकर एतिहासिक निर्णय लिया है. कर्नाटक को दूध उत्पादन में 12 वे से पहले स्थान में लाने के लिए यह पहला कदम है.

गायों के पालन करने के लिए स्वास्थय के प्रति जागरुकता के साथ गोशालाओं के संचालन के लिए राज्य सरकार प्रयत्नशील है.

अनुसंधान

गोमूत्र एवं गोबर पर अनुसंधान करने के लिए तथा विभिन्न प्रयोगों के लिए प्रोत्साहन करने राज्य सरकार कटिबद्ध है.

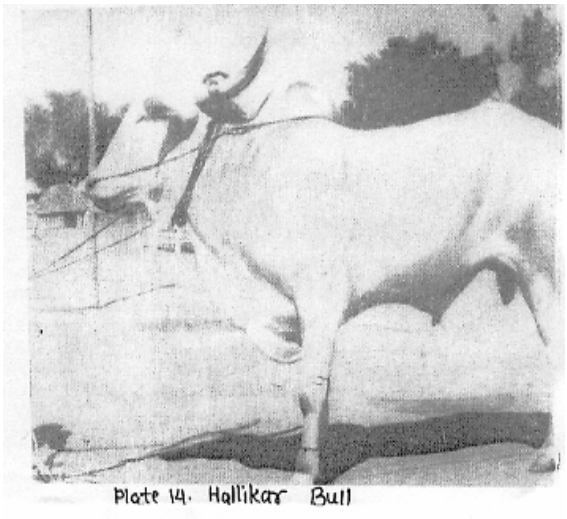

कर्नाटक राज्य में खिल्लार, हल्लीकर, देवनी, अमृतमहाल पायी जाती हैं. गायों में दूध कम मिलता है लेकिन बैलों का काफी अच्छा प्रयोग किया जाता है. कामधेनु के विकास करने के लिए कर्नाटक राज्य के द्वारा बेंगलोर में गो सेवा आयोग 2012 में प्रारम्भ किया गया है.

पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र

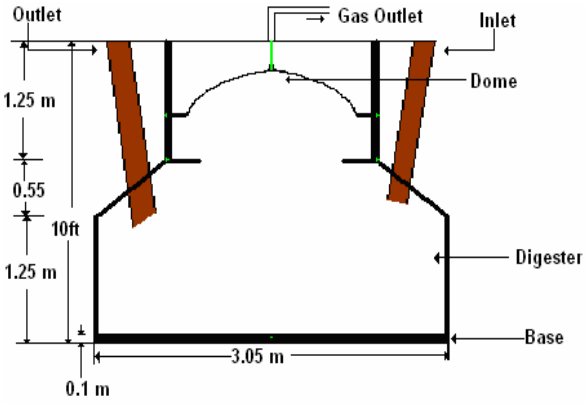

कर्नाटक राज्य में वातावरण संतुलन बनाये रखने तथा जनकल्याण करने के लिए 6,80,000 पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र लगाने का लक्ष्य रखा गया है लेकिन एलपीजी पर पूरी तरह से निर्भर रहने के कारण ही गोबर गैस के लिए जनता की उदासी के कारण ही मात्र 3,92,382 पारिवारिक गोबर गेस संयंत्र ही लग पाये हैं.

कार्बन क्रेडिट के बारे में जानकारी नहीं है इसलिए गोबर गैस की उपेक्षा की गयी है. उर्जा विकास एजेन्सीज के माध्यम से बहुत ही तेजी के साथ में कार्य किया गया है. एनजीओ ने भी गोबर गेस संयंत्र के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है.

गोशालाओं और पांजरापोलों में पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बढ़ती हुई उर्जा की मांग को ध्यान में रखकर गोबर गैस संयंत्रों की नींव रखी गयी है.

हनिया

अनुसंधान

कर्नाटक में सिमोगा जिले में होसनगर तहसील में हनिया पिन 577491 08185-256056, 256048, 256170 में श्रीरामचंद्रपुरम मठ में भी 36 वें शंकराचार्य श्री राघवेश्वर भारती जी के द्वारा भारत में प्राचीन काल में मौजूद 140 गोवंश प्रजातियों के फिर से सम्मानित ढंग से लाने के लिए बहुत ही वैज्ञानिक तरीके से कार्य किया जा रहा है.

वर्तमान में भारत में रा-ट्रीय पशु के रुप में सिंह को सम्मान दिया जा रहा है. गोवंश को सम्मान दिलवाने के लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता है.

ब्राजील में 98 प्रतिशत भारतीय गोवंश मोजूद है. ब्राजील में भारतीय गोवंश का विकास बहुत ही वैज्ञानिक तरीके से किया गया है.

140 गोवंश प्रजातियां

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के माध्यम से गोवंश की 140 प्रजातियों के बारे में गोवंश प्रेमियों को विस्तार से सीडी एवं डीवीडी के माध्यम से बताया जायेगा.

गोवंश को पूरी तरह से स्वतंत्र करने के लिए काउ यूनिवर्सिटी की भी नींव रखने के लिए कार्य किया जा रहा है.

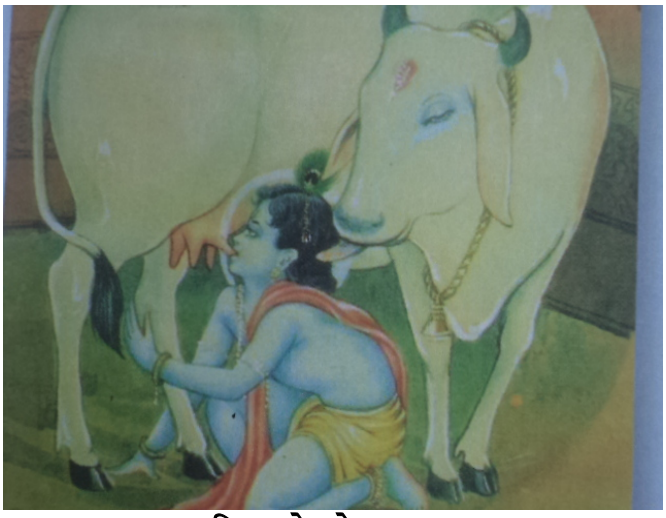

विश्व गो को-ा

विश्वको-ा गो पर 7 भागों में प्रकाशित किया गया है.

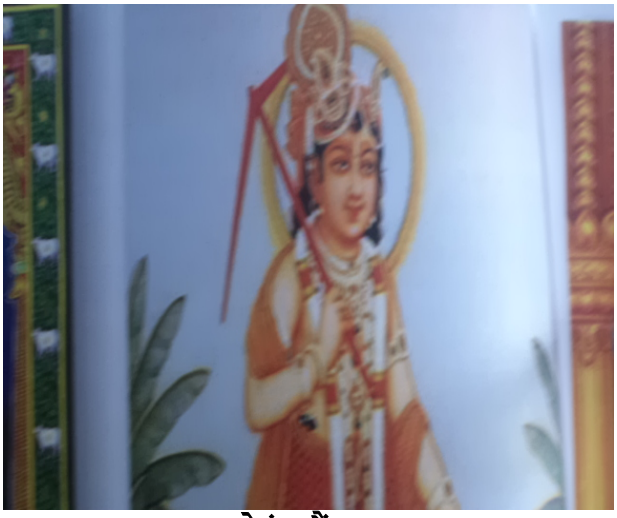

गोवंश बैंक

गोवंश बैंक की नींव रखकर खेती करने वाले किसानों को उधार में गोवंश देकर तथा दूध न देने पर मठ में गोवंश को लेकर गोवंश का संवर्धन तथा संरक्षण का कार्य किया जा रहा है.

पंचगव्य औ-धियां

32 प्रजातियों का पालन कर उनका मूत्र ब्रहम मूहर्त में बहुत ही सावधानी के साथ में अलग अलग पात्रों में एकत्रित कर वैज्ञानिक तथा आयुर्वेद के अनुसार ही पंचगव्य दवाएं बहुत बड़े स्तर पर तैयार की जा रही हैं.

उनके कार्य के बारे में सभी चेनलों में भी जानकारी प्रसारित की गयी है.

पूरे भारत में एडस को दूर करने के लिए स्वामी जी के द्वारा पंचगव्य दवाओं का वितरण बहुत ही कम मूल्य पर किया जा रहा है.

वेबसाइट

वेबसाइट गोवंश संवर्धन पर अंग्रेजी में तैयार की गयी है.

वीसीडी

1 घंटे की वीडियो सीडी 32 प्रजातियों पर सरल अंग्रेजी में तैयार की गयी है.

साहित्य

गोवंश की प्रजातियों की जानकारी विश्व को देने के लिए सरल हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, संस्कृत आदि में साहित्य का प्रकाशन किया गया है. साहित्य का निःशुल्क वितरण किया गया है.

संपर्क

पूरे भारत में व्यक्तिगत स्तर पर संपर्क कर वहां लोगों को गोवंश के बारे में विस्तार से समझाया हे तथा लोगों को संकल्प करवाया है कि गोवंश कटने के लिए न जाए तथा हर घर में गोवंश का सम्मान किया जाये.

विश्व गो सम्मेलन

हर घर में गोपालन प्रारम्भ करवाया जा रहा है. दक्षिण भारत में गोपालन करने के लिए 21 अप्रेल से 29 अप्रेल 2007 तक पहली बार विश्व गो सम्मेलन का आयोजन किया गया था.

पूरे विश्व से 20 लाख लोग आये थे. हर दिन पौने 2 लाख लोग आये थे.

9 घंटों तक जैविक खेती करने के लिए लगातार चिंतन किया जाता था.

2 नंदी सभापति बनकर बैठते थे. प्रस्ताव भी पारित किये गये थे. वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया था.

करोड़ों का खर्च कर यह आयोजन पहली बार किया गया था. आने जाने का खर्च भी महत्वपूर्ण लोगों को दिया गया था.

कामधेनु विश्वविद्यालय, गोमूत्र बैंक, गोवंश सींग बैंक, केंचुआ जीन बैंक, पंचगव्य कांउसिल, नंदीशाला की भी तैयारियां चल रही हैं.

मैसूर

अमृतमहाल

मैसूर राज्य में हसन, फेंच रोक्स, अरासिकेरे, कृष्णराजनगर, अरकालगुड, सालीग्राम, चनेरपटना, तुमकुर, हिरियुर, हरिहर, सिमोगा, सोराब, चन्नागिरी, होनाली, कलसा कोचीन में चित्तुर में मेले लगाये गये थे.

मैसूर वर्तमान में अपनी दिव्य सम्पन्नता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है.

मैसूर पाक

मैसूर पाक बहुत ही पौि-टक तथा स्वादि-ट व्यंजन है. मैसूर पाक हर त्यौहार तथा उत्सव में प्राचीन समय से ही तैयार किया जाता है. मैसूर पाक गाय के दूध से ही तैयार किया जाता है.

निर्यात

मैसूर पाक आज पूरे विश्व में अपनी विशे-ा पहचान बना चुका है. मैसूर में कर्नाटक डेयरी के द्वारा मैसूर पाक बहुत बड़े स्तर पर तैयार कर आक-र्क पैक में निर्यात किया जा रहा है.

सरकारी पार्लरों में मैसूर में बाहर से आने वाले यात्रियों को मैसूर पाक बेचा जाता है.

कंगायम नस्ल

कंगायम सर्वांगी नस्ल अंगोल के साथ में मैसूर की स्थानीय नस्ल के साथ में मिलाकर विकसित की गयी है.

मैसूर का उत्तरी भाग समुद्र से 1800 फीट तथा दक्षिण भाग 3000 फीट उंचा है. मैसूर में जून माह में प्रारम्भ में बहुत ही अच्छी बारिश होती है. अगस्त माह में कुछ समय बारिश होती है.

सितम्बर से नवम्बर माह में बारिश होती है. नवम्बर से फरवरी तक ठंड रहती है. गरमी मार्च से मई तक पड़ती है. मौसम की अनुकूलता के कारण ही मैसूर बाहर से आने वालों को आकर्-ित करता है.

प्रतिदिन समूह में लोग प्राकृतिक सौंदर्य के कारण ही आते हैं. अपार धन लगाकर वृंदावन गार्डन तैयार किया गया है. वृदावन उद्यान में यात्री रंगीन रोशनी में रोमांचित होते हैं. विशाल एवं विश्व में अपनी अदभुत संरचना के लिए प्रसिद्ध बगीचे में घंटो समय बिताने के लिए लोग लालायित रहते हैं.

प्राचीन समय से नंदी के विकास करने के लिए मैसूर प्रसिद्ध है. चामुंडा हिल नंदी के कारण ही विश्व में प्रसिद्ध है. नंदी की भव्य प्रतिमा को देखने के लिए हर वर्ग के लोग आते हैं.

कृ-णावल्ली

कृ-णावल्ली के विकास करने के लिए मैसूर की स्थानीय नस्ल के साथ में अंगोल तथा कांकरेज नस्ल को मिलाकर प्रयत्न किया गया है.

हल्लीकर

हल्लीकर नस्ल को बहुत अधिक बढावा देने के लिये मैसूर राज्य में बेंगलोर, होसकोटे, कनकनहल्ली, चेनापटना, नेलामनगला, मगदी, देवनहल्ली, दोदबल्लापुर, सिदलाघटटा, बागेपल्ली, चिंतामनी, गोरीबिदनूर, चिकबल्लापुर, मलूर, कोल्लर, हसन, कृष्णराजनगर, अराकालगुड, सालीग्राम, होलेनरसीपुर, मददूर, मल्लावली, नागामनगोला, चन्नेरयापटना, तुमकुर, चिकनायकनहाली, सिरा, पवगडडा, कुनीगल, तुरुवेरकेरे, मधुगिरी, गुब्बी, हिरीयूर, हरिहर, सिमोगा, सोराब, चन्नागिरी, होन्नली, कलसा में भव्य मेले आजादी के पहले आयोजित किये गये थे. मैसूर, हसन, तुमकुर जिले में हल्लीकर नस्ल वत्स प्रधान है.

कामधेनु सेवा

1965 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई में पंजीकृत कर मैसूर पांजरापोल सोसायटी चामुंडी हिल फूट नानजानगुड रोड, मैसूर 570025 गोवंश के संरक्षण करने के लिए बहुत ही सावधानी के साथ में जनसहयोग से कार्य कर रही है तथा कामधेनु के विकास करने के लिए कामधेनु पाठशाला से लेकर विश्वविद्यालय तक के लिए गांव गांव में लोगों को समझाकर तैयार किया गया है.

मैसूर में अमृतमहाल एवं हल्लीकर नस्ल के विकास करने के लिए आजादी के पूर्व मेले लगाये गये थे.

साप्ताहिक ढोर बाजारों में बेचने आ रहे गोवंश को रोकने के लिए उपाय चल रहे हैं. रात्रि के समय में ट्रकों में कटने जा रहे गोवंश को रोकने के लिए प्रयत्न किया गया है.

पशु कल्याण अधिकारी गोवंश के सम्मान करने के लिए पूरी तरह से सक्रिय हैं. गोवंश के मूत्र एवं गोबर के उपयोग करने के लिए अनुसंधान पर ध्यान दिया जा रहा है. जैविक खादें तैयार करने के लिए प्रशिक्षण देने की भी

व्यवस्था की गयी है. गोबर गैस से सीएनजी के लिए विचार किया गया है. गोमूत्र से पंचगव्य दवाओं के लिए भी कार्य चल रहा है.

अमृतमहाल

अमृतमहाल नस्ल को सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्न किया गया है. मैसूर में पहले 60,000 अमृतमहाल नस्ल हैदरअली के समय मौजूद थे.

एक बार वापस 60,000 अमृतमहाल गोवंश को लाने के लिए बहुत अधिक धन एवं विशाल भूमि पर कार्य किया जा रहा है.

रैली सम्मेलन शिविर बैठक करके जन जन को जगाया गया है. हर घर में गोवंश को रखने के लिए गोग्रास योजना के लिए कार्य किया गया है.

गोचर की भूमि पर हो रहे अवैध कब्जे हटाने के लिए अभियान चलाया गया है. गोवंश के संवर्धन करने के लिए नंदी के विकास करने के लिए बहुत ही अधिक मेहनत कर रही है.

गोमाताओं का दूध बढ़ाने के लिए नस्ल सुधार का कार्य संतुलित आहार बीमारियों के उपचार करने के लिए 43 सालों से निरन्तर संगठित होकर जबरदस्त कार्य कर रही है.

मलयाचल पर्वत

श्री महाप्रभुजी की 42 वी बैठक

वर्तमान में यह बैठक अप्रगट है. कोयम्बतूर के पास में उताकामंड स्टेशन के पास में नीलगिरी की पहाड़ी आती है. मलयाचल पर्वत यहां पर है. उटी से मैसूर जाते समय होस्पेट गांव के पास में श्री हेमगोपालजी मंदिर के बाजू में मलयाचल पर्वत पर बैठक है.

वर्तमान में वै-णवों को बैठक यात्रा में भावात्मक रुप से महाप्रभुजी की बैठक का दर्शन करवाया जाता है. बहुत ही अदभुत प्राकृतिक सौंदर्य मौजूद है.

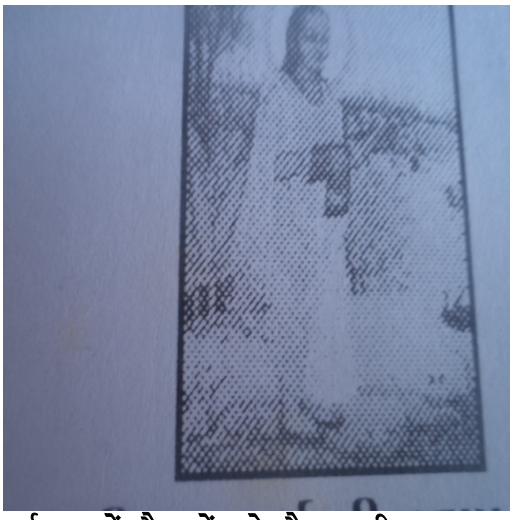

वर्तमान में वै-णवों को बैठक जी का भाव करने पर आचार्य जी के प्रत्यक्ष तेज का अनुभव यहां पर नित्य होता है.

आपने चंदन के वृक्ष के नीचे बिराजकर कृ-णदास से कहा कि यहां पर हेम गोपाल जी बिराजते हैं.

जब हेम गोपाल जी को मालूम हुआ कि आचार्य जी पधारे हैं तब आचार्य जी से मिलने के लिए सामने से पधारे. परस्पर मिलन हुआ तथा चर्चा चली. अनिर्वचनीय सुख हुआ.

आप ऐसी विकट जगह पर पधारे हैं जहां पर तामसी जीव बहुत हैं तथा आपस में लड़ते रहते हैं. यहां के तामसी जीव बहुत ही जहरीले हें. आप वै-णव को मत भेजियेगा. आपके लिए फलाहार मैं लाउंगा.

आचार्य जी ने कहा कि मैं यहां पर एक माह रहूंगा.

आपके प्रताप से मेरे सेवकों को कोई परेशान नहीं करेगा. यह सुनकर हेम गोपाल जी बहुत प्रसन्न हुए. उन्होंने कहा कि यहां पर चंदन का वन है लेकिन मेरी गरमी नहीं मिटती हे. आपके दर्शन मात्र से मेरे रोम रोम शीतल हो गये.

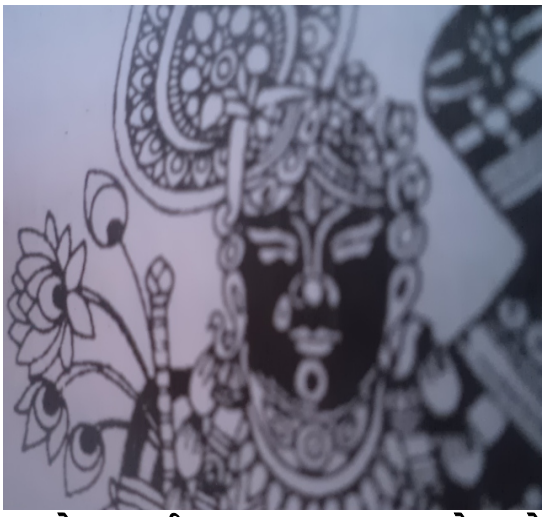

आपके धरती पर प्रागटय से लेकर श्रीगोवर्धननाथजी के प्रागटय सब लीला सहित श्री गिरीराजजी में हुआ है उसकी जानकारी आपसे चाही. आचार्य जी ने विस्तार से सारी बातें बतलायी. तब हेम गोपाल जी ने आचार्य जी को कहा कि आप मंदिर में पधारे.

तब आचार्य जी ने कृ-णदास को अरगजा सिद्ध करने को कहा. दामोदरदास को कहा कि केला और नारियल सुधारो. मंदिर पधारकर हेम गोपाल जी को अरगजा समर्पित कर सामग्री आरोगायी.

दूसरे दिन श्रीमद भागवत सप्ताह आरम्भ की. तब हेम गोपाल जी कथा सुनने के लिए पधारे.

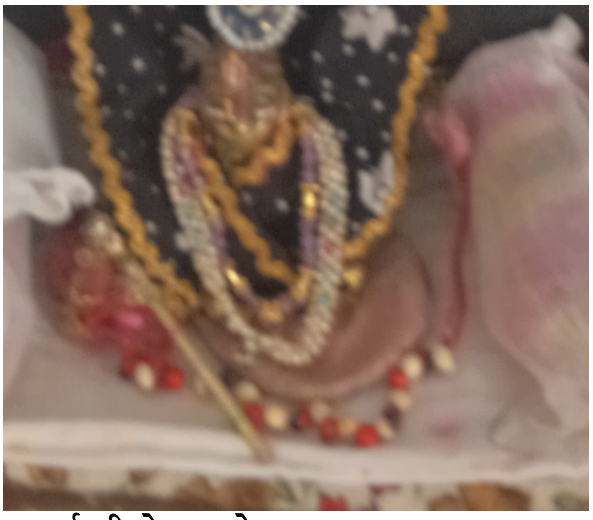

आचार्य जी ने आपको आसन पर पधराया.

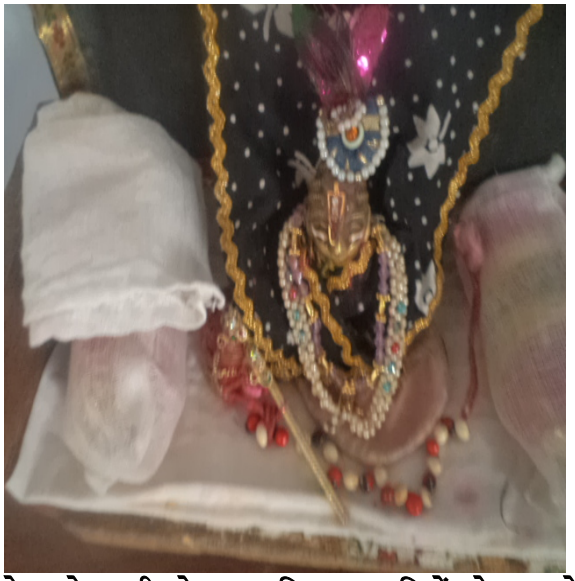

हेम गोपालजी ने कहा कि बहुत दिनों से आपके श्रीमुख से कथा सुनने की इच्छा थी. हेम गोपाल जी कथा के अंत तक बिराजे.

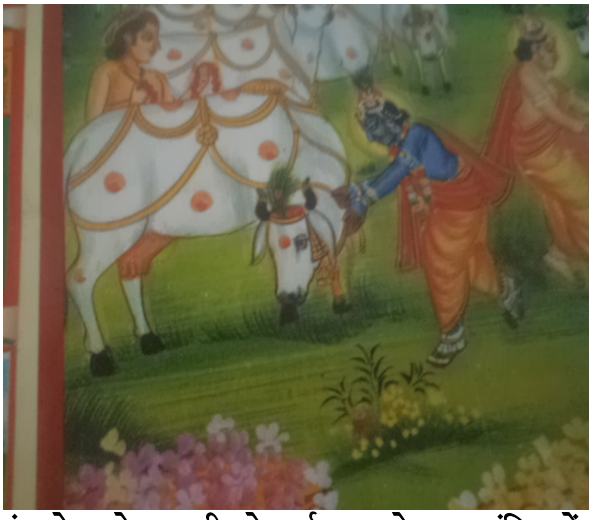

इंद्र हेम गोपाल जी के दर्शन करने जब मंदिर में गया तो हेम गोपाल जी के दर्शन नहीं हुए.

इंद्र ने पूछा कि आप कहा गये थे? आचार्य जी के बारे में बताने पर इंद्र ने आचार्य जी के स्वरुप के बारे में पूछा.

आचार्य जी के दर्शन करने के लिए इंद्र गया तथा सा-टांग दंडवत कर आचार्य जी को कहा कि हेम गोपाल जी की कृपा से आपके दर्शन हुए.

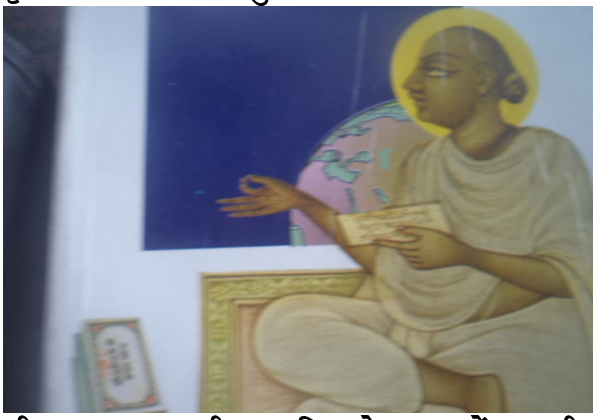

श्रीमद भागवत की समाप्ति के बाद में अपनी चरणरज से अनेको तामसी जीवों का उद्धार किया. यहां से आप गोआ में लोहगढ़ होते हुए दक्षिण के लिए रवाना हुए.

लाल सींधी

कर्नाटक में कोइला केटल फार्म 574288 में लाल सींधी नस्ल का संवर्धन सरकार के द्वारा किया गया है.

देवनी

धारवाड़ में देवनी नस्ल के संवर्धन करने के लिए सरकार प्रयत्नशील है.

बैंगलोर

पंचगव्य

विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पथमेड़ा तहसील सांचोर, जिला जालोर, राजस्थान के पंचगव्य महो-धियों, च्यवनप्राश तथा दूध के सभी उत्पाद बैंगलोर में मोबाइल 09448071180, 09483520101 पर उपलब्ध हैं.

जीवदया सेना

श्री चौथमल गोयनका जी मोबाइल 9341626601 के नेतृत्व में शाकाहार का प्रचार प्रसार करने तथा जीवदया सेना बनाने के लिए अ. कर्नाटक प्राणी दया संघ 80 फीट रोड, 6 अ ब्लोक, कोरमंगला, बेंगलौर 95 संचालक श्री यू.सी. दुग्गड़ 080-25532204 1981 से 5 एकड़ भूमि पर 30 कर्मचारी वर्तमान में 650 गोवंश का पालन 1 करोड़ खर्च कर रहे हैं.

हेसरधटटा

कामधेनु संवर्धन

कामधेनु के संवर्धन करने के लिए गंभीरता के साथ में सरकार के द्वारा कृत्रिम गर्भधान करने के लिए गीर, देवनी, अमृतमहाल, कृ-णावल्ली, हल्लीकर, खिल्लारी, साहीवाल, लाल सींधी, थारपारकर, हरियाणा नस्ल के वीर्य एकत्रित किये गये हैं.

केंद्रीय हिमित वीर्य उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान हेसरघटटा बेंगलोर कर्नाटक 560088 दूरभाष 28466227 से पूरे भारत के लोगों के लिए मार्गदर्शन उपलब्ध हैं.

बेंगलोर में 1993 के सर्वेक्षण के अनुसार सितम्बर अक्तूबर माह में 16.9 टन खोआ प्रतिदिन बिकता है. अप्रेल से अगस्त माह में 8.9 टन खोआ प्रतिदिन बिकता है. नवम्बर से मार्च तक खोआ 5.5 टन प्रतिदिन बिकता है.

बेंगलोर में 1000 मिठाई की दुकाने हैं. बेंगलोर में 24,169.6 टन मिठाईयां प्रति वर्ष बिक रही हैं. खोए की मिठाईयों की मांग सबसे अधिक अक्तूबर एवं नवम्बर माह में दीपावली के समय रहती है.

कामधेनु सेवा

श्री वल्लभाचार्य जी के सिद्धांतों पर संगठित होकर वे-णव कामधेनु के संवर्धन करने के लिए हवेली में उत्सवों तथा महोत्सवों में एकत्रित होते हैं.

कामधेनु प्रचार

डा. प्रतिपती रामैया जी, ब्लोक एच-331, सेनाविहार, कामन्ना हल्ली, मेन रोड, बेंगलोर 560043, मोबाइल 9916671025 सेवा निवृत अभियंता 74 साल की आयु में गोवंश की रक्षा तथा संवर्धन करने के लिए एक पुस्तक का प्रकाशन करने के लिए 20 सालों से सक्रिय हैं.

वर्तमान में किसानों के द्वारा जैविक खेती करने के लिए मार्गदर्शन दे रहे हैं.

केचुआ खाद

प्राचार्य बहु उद्योगीय प्रशिक्षण केंद्र खादी और ग्रामोद्योग आयोग दूरवाणी नगर बैंगलोर कर्नाटक 560016 दूरभाष 080 5650285 बेंगलोर में 2000 टन कचरे का उपयोग करने के लिए केंचुआ खाद बनाने का प्रशिक्षण दे रही है.

अनुसंधान

कर्नाटक में बेंगलोर में बहुत अधिक अनुसंधान किये गये हैं. बड़े स्तर पर केंचुआ खाद तैयार करने के लिये कर्नाटक के किसान सफल हुए हैं.

चौथी विधि

केंचुआ खाद तैयार करने की चौथी विधि में पानी की कमी करने तथा व्यक्तिगत देखरेख में कमी कर केंचुआ खाद बनाने के लिये कृ-ि विश्वविद्यालय बेंगलोर के डाक्टर आर. डी. काले ने तैयार किया है.

टेंक अथवा क्यारी में केंचुओं का आहार भरकर उसमें प्र्याप्त मात्रा में पानी उसे भिगोने के लिये डाला जाता है.

खुले मैदानों और खेतों में केंचुआ खाद

किसानों ने अपनी आवश्यकता के कारण खुले मैदान व खेतों में केंचुआ खाद तैयार करने के लिये इच्छित लम्बाई तथा चौड़ाई एवं 2 फुट उंचा बैड तैयार किया जाता है. जैविक अवशे-ा में सीधे केंचुए छोड़ दिये जाते हैं.

केंचुओं की प्रजनन व बढ़ोत्तरी दर की क्षमता अधिक होने के कारण केंचुओं को कुछ क्षति परभक्षी शत्रुओं से होने के बाद भी जीवित बचे केचुए आवश्यक खाद बनाने के लिये सहायक होते हैं. यह तरीका केंचुआ खाद बनाने के लिये सबसे सस्ता तरीका है.

3600 टन

बड़े स्तर पर 3600 टन केंचुआ खाद एक साथ उद्योग के रुप में कर्नाटक में हर साल तैयार किया जाता है. इसमें किसानों को न्यूनतम ध्यान देना पड़ता है.

कार्बन क्रेडिट

कार्बन क्रेडिट प्राप्त करने के लिए कर्नाटक बहुत ही सक्रिय है.

बैंगलोर वर्तमान में प्राकृतिक सौंदर्य एवं सुहावने मौसम के साथ में सम्पन्नता के लिए प्रसिद्ध है. प्रतिदिन बैंगलोर में पूरे विश्व से समूह में घूमने के लिए लोग आते हैं. बैगलोर के बगीचे अपने आप में मानव के लिए आनन्द के केंद्र हैं.

सरकार भी वर्तमान में कृत्रिम गर्भाधान कर गांव गांव में नंदी के लिए विशे-ा प्रयत्न चल रहे हैं.

विश्व प्रसिद्ध नंदी के मंदिर में भी विशाल नंदी प्रतिमा के दर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते हैं.

मेले

हल्लीकर नस्ल को कर्नाटक राज्य में बढ़ावा देने के लिए बेंगलोर में विशाल भव्य मेले आजादी के पहले लगाये गये थे. मेलों के माध्यम से हल्लीकर गायें हर घर में पहुंच गयी थी. दूध उत्पादन चरम सीमा पर पहुंच गया था. हरी घांस गोवंश के लिए हमेशा भरपेट मिल रही थी. गायें अधिकतम दूध दे रही थी.

किसानों को खेती करने के लिए बढिया बैल मिल गये थे. हल्लीकर नस्ल अमृतमहाल नस्ल की एक महत्वपूर्ण शाखा है. हल्लीकर नस्ल अमृतमहाल की तुलना में अधिक दूध देती है. बेंगलोर की आर्थिक सम्पन्नता के पीछे हल्लीकर नस्ल की भूमिका महत्वपूर्ण है.

बेलगाम

श्री म.नि.ज. दूरदूंडीश्वर मठ, गोशाला

श्रीमान निरंजन जगतगुरु पंचम, श्री शिवलिंगेश्वर महास्वामी स्वामीजी के द्वारा 25 मई 1996 में श्री म.नि. ज. दूरदूंडीश्वर मठ, निडसोशी, तहसील हूक्केरी, जिला बेलगांव कर्नाटक 591236 दूरभा-ा 08333-278633, 09901243037 में 35.16 हेक्टर भूमि पर 7 लाख खर्च कर 6 कर्मचारी तथा 9 सदस्य, 2 सहयोगी 500 गोवंश रखने वाली गोशाला में वर्तमान में 130 गोवंश पाले जा रहे हैं.

वर्तमान में पानी तथा कर्मचारी की समस्या है. श्री सुनील आर पाटिल सचिव मोबाइल 9901243087 गोशाला में 40 पेड़ लगाकर तथा 5 एकड़ में चारा उगा रहे हैं. देशी गाय 100 हैं तथा चंदे की आवश्यकता है.

वर्तमान में 12 बेलों से खेती कर रहे हैं.

बेलगाम अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए ही विश्व में जाना जाता है. बेलगाम वर्तमान में कामधेनु, सुरभि, नंदनी, बहुला, कपिला जैसी दिव्य तथा अदभुत गोवंश के विकास करने के कारण ही सम्पन्नता के लिए प्रसिद्ध है.

बेलगाम में कृ-णावल्ली प्रजाति का विकास किया गया है. कृ-णावल्ली नस्ल दूध भी अधिक देती है तथा वत्स भी मजबूत देती है.

बेलगाम में खिल्लारी नस्ल का विकास किया गया है. वर्तमान में खिल्लारी के अच्छे बैलों के बिक्री करने के लिए मेले लगाये जा रहे हैं.

बेलगाम में अमृतमहाल नस्ल के विकास करने के लिए प्राचीन समय में भव्य एवं आक-र्क मेले लगाये गये थे. अमृतमहाल नस्ल यहां पर देखने लायक थी.

बेलारी

वर्तमान में हल्लीकर के विकास करने के लिए बेलारी काफी आगे है. जैविक खेती करने के लिए किसानों को विशे-ा प्रशिक्षण दिया जाता है. जैविक खेती के परिणाम बहुत ही अच्छे देखने मिल रहे हैं.

बेलारी में मेलों, बैल दौड़ों तथा उत्सवों के माध्यम से अमृतमहाल तथा भारत की महत्वपूर्ण नस्ल के विकास करने के कारण ही सम्पन्न तथा बहुत ही सुखी था.

भद्रावती

भद्रावती प्राचीन समय में अमृतमहाल, हल्लीकर एवं कृ-णावल्ली जैसी बहुत सारी महत्वपूर्ण गोवंश के विकास करने के कारण ही विकसित था.

बिदर

बिदर प्राचीन समय में अमृतमहाल, हल्लीकर तथा कृ-णावल्ली जैसी बहुत सारी प्रजातियों के विकास करने के लिए मेलों का आयोजन कर रहा था.

बीजापुर

बीजापुर आदिलशाह के अत्याचारों के कारण अपनी पहचान बना चुका है. शिवाजी के द्वारा बीजापुर को मुसलमान सत्ता से मुक्त करने के लिए विशे-ा प्रयत्न किया गया था.

बीजापुर में कृ-णावल्ली गोवंश के लिए उल्लेखनीय प्रयत्न किया गया था. खिल्लारी नस्ल यहां पर विकसित की गयी है. हैदरअली एवं टीपू सुल्तान के समय में सम्पन्नता चरम सीमा पर थी. बहुत ही कठोर नियमों के साथ में अपार धन निवेश कर संरक्षण करने के लिए कार्य किया गया था. खेती करने के लिए हल बैल सवायी चाल के तैयार किये गये हैं.

बहुत ही तेज परिवहन करने के लिए बैल विशे-ा अनुसंधान के साथ में तैयार किये गये हैं. बैलों की उपयोगिता के कारण बहुत अच्छे मूल्य मेलों में मिलते थे. बढ़िया सांढ़ के विकास करने के कारण गायें बहुत ही अधिक दूध देती थी. अमृत का खजाना होने के कारण ही अमृतमहाल नाम रखा गया है.

बीजापुर में अमृतमहाल नस्ल के विकास करने के लिए समय समय पर विशाल मेले लगाये गये थे.

चमाराजनगर

चमाराजनगर कर्नाटक राज्य में बहुत ही सम्पन्न था. अमृतमहाल नस्ल यहां पर सुरक्षित थी. हल्लीकर नस्ल वर्तमान में मौजूद है. हल्लीकर नस्ल अमृतमहाल की एक शाखा है. हैदरअली एवं टीपूसुल्तान के समय में अमृतमहाल के विकास करने के लिए प्रसिद्ध था.

चन्नापटना

हल्लीकर तथा अमृतमहाल नस्ल के कारण बहुत प्रसिद्ध था. वर्तमान में अपार संभावनाओं के कारण नयी योजनाओं के साथ कार्य चल रहा है. चन्नापटना सभी महतवपूर्ण गोवंश के आर्थिक विकास करने के कारण ही हैदरअली के समय से बहुत ही सम्पन्न था.

गुलबर्गा

किसानों के द्वारा कामधेनु, सुरभि, नंदनी, कपिला, बहुला, श्यामा के लिए विशे-ा प्रयत्न किया है. गुलबर्गा अमृतमहाल नस्ल के गनपैक बैलों के विकास करने के लिए महत्वपूर्ण था.

गोकाक

गोकाक परिवहन करने के लिए अमृतमहाल नस्ल के बैलों के विकास करने के लिए प्रसिद्ध था.

हसन

हसन गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था. हल्लीकर का विकास हसन जिले में विशे-ा रुप से किया गया है. हल्लीकर अमृतमहाल की एक महत्वपूर्ण प्रजाति है. आज भी हल्लीकर गोवंश के विकास करने के लिए मेले लगाये जा रहे हैं. हल्लीकर गायें वत्स प्रधान होने के बाद भी अधिक दूध देती है.

हसन की सम्पन्नता अमृतमहाल के कारण ही थी. बैलों का भार 490 किलोग्राम तक था. 4 साल की आयु में सबसे अच्छा कार्य करते हैं.

9 से 10 साल की आयु तक पूरी क्षमता के साथ में बहुत अच्छे परिणाम देते हैं. अस्थिर, अनियंत्रित एवं जंगली बैलों को प्रशिक्षित करने के लिए बहुत ही मेहनत करनी पड़ती है. प्रशिक्षित बैलों का उपयोग मानव के लिए वरदान है.

हसन में अमृतमहाल बैलों का मूल्य मेलों में किसानों के द्वारा खेती में उपयोग करने के कारण ही बहुत ही अच्छा मिलता था. अपनी तेज चाल के कारण ही परिवहन करने के लिए उपयोग किया जाता था. हर प्रकार के वातावरण में गति बनी रहती थी.

हसन में अमृतमहाल नस्ल के विकास करने के लिए विशाल एवं भव्य मेले लगाये गये थे.

हुबली

हुबली वर्तमान में सम्पन्नता के कारण किसान कामधेनु के विकास करने के लिए सक्रिय है. हुबली अमृतमहाल, हल्लीकर, कृ-णावल्ली, खिल्लारी जैसी नस्लों के विकास करने के कारण सम्पन्न एवं सुखी था.

मेंगलोर

मेंगलोर अपनी प्राकृतिक सम्पन्नता के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है. बारिश यहां पर अगस्त से नवम्बर तक होती है. बारिश के कारण मौसम बहुत ही सुहावना रहता है. हरी हरी कोमल घांस गोवंश को मिलती रहती है. बाहर से आने वाले यात्री के लिए हर तरह की अनुकूलता है. मेंगलोर की हरियाली के कारण ही यात्रियों का मन मोह लिया है.

मेंगलोर हैदरअली एवं टीपू सुल्तान के समय में अमृतमहाल, हल्लीकर, कृ-णावल्ली एवं खिल्लारी के विकास करने के कारण बहुत ही सम्पन्न था.

रायचूर

श्रीकृ-णानदी

श्री महाप्रभुजी की 45 वी बैठक

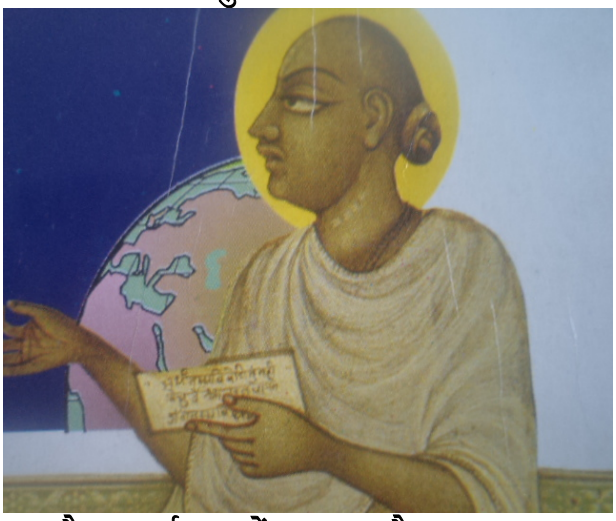

यह बैठक वर्तमान में अप्रगट है तथा रायचुर स्टेशन से 1 किलोमीटर दूर वाडी जंक्शन कृ-णधाम में कृ-णानदी के किनारे पर पीपल के वृक्ष के नीचे है.

प्रकृति के मनोहर वरदान के कारण जाने अनजाने लोग यहां पर आते हैं. श्री महाप्रभुजी यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं तथा वर्तमान में भी वै-णवों को समय समय पर प्रत्यक्ष अपना अनुभव करवा रहे हैं.

श्री आचार्य जी ने दामोदरदास को आज्ञा की कि यहां पर तेलंग ब्राहमण मायावादी बहुत ही हैं. पहले श्रीमद भागवत सप्ताह करेंगे जिससे मायावादी स्वयं ही चले आयेंगे. सहज ही में चर्चा हो जायेगी.

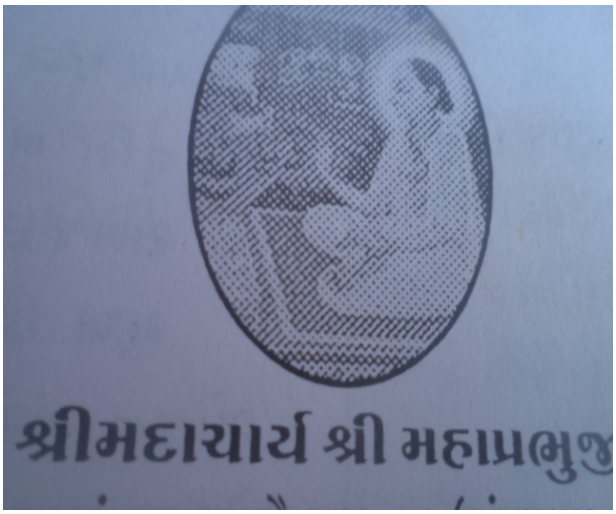

जब आचार्य जी ने पारायण प्रारम्भ किया तब चारों संप्रदाय के वै-णव दर्शन करने के लिए आये. सभी ने विनंती की कि मायावादी बहुत ही अधिक जोर में हैं तथा हमें बहुत ही तकलीफ देते हें. आप मायावादियों को हरा कर हमारी रक्षा करें.

आपने वै-णवों को कहा कि हम मायावादियों को हराकर भक्तिमत की स्थापना करने के लिए ही आये हैं. आज श्रीमद भागवत की समाप्ति हो चुकी है तथा मायावादी आते ही होंगे.

जब यह बात मायावादियों को मालूम हुई तो उन्होंने आपस में चर्चा की कि कृ-णानदी के किनारे दिग्विजय कर वल्लभाचार्य जी पधारे हैं जिनका तेज बहुत ही अधिक है तथा उनके सामने किसी से बोलना संभव नहीं होता है.

सभी मायावादी पंडित मिलकर आपके पास में आये. आपने सभी पंडितों को आदर के साथ में बिठाया तथा चर्चा प्रारम्भ की. एक प्रहर तक चर्चा चली. सभी को निरुत्तर किया तथा मायामत का खंडन कर भक्ति मार्ग की स्थापना की. चारों संप्रदाय के वै-णव बहुत ही प्रसन्न हुए तथा सभी ने विनंती की कि सेवक करें. आचार्य जी के अदभुत प्रभाव को देखकर अनेक जीव आपकी शरण में आये.

मायावादी भी आपसे बहुत ही अधिक प्रभावित हुए तथा आपके सेवक बनने के लिए विनंती की. आपने सभी को रुद्राक्ष उतार कर कृ-णानदी में स्नान करने को कहा. आपने सभी को तुलसी की माला पहिनाई. सभी को नाम सुनाया तब आपकी जयजयकार हुई.

रायचूर गोवंश के विकास करने के लिए मेले तथा उत्सव जैसे अनेको कार्यक्रम कर बहुत ही सुखी तथा सम्पन्न हे.

शाहपुर

शाहपुर अमृतमहाल नस्ल के गनपैक बैलों के विकास करने के लिए अहम भूमिका निभा चुकी है.

शिमोगा

प्राचीन समय से ही शिमोगा में गोवंश संवर्धन करने के लिए संतो ंके द्वारा लगातार प्रयत्न हुए हैं. यहां पर वर्तमान में सभी भारतीय गोवंश मौजूद हैं. शिमोगा में अमृतमहाल, हल्लीकर, कृ-णावल्ली नस्ल के विकास करने के लिए विशाल एवं भव्य मेले आयोजित किये गये थे.

सिंदगी

सिंदगी गोमहाविज्ञान का उपयोग कर बहुत बढ़िया सांढ विकसित कर कर्नाटक राज्य के लिए वरदान बन गया था.

शोरापुर

शोरापुर गोपा-टमी जैसे महत्वपूर्ण उत्सव सामुहिक स्तर पर बहुत ही उत्साह के साथ में मनाने के कारण अपार गोचर पर चरम सीमा में गोवंश रखकर मालामाल था.

श्रीरंगपटना

बहुत ही कड़ी सुरक्षा में श्रीरंगपटना को राजधानी के रुप में विकसित किया गया था. आज भी उत्सव के समय में राजधानी की झलक दिखायी देती है.

अपने समय में हैदरअली के द्वारा भव्य किला बनवाया गया था. वर्तमान में भी किले को देखने के लिए प्रतिदिन समूह में लोग आते हैं.

श्रीरंगपटना हैदरअली तथा टीपू सुल्तान के समय में सम्पन्न तथा सुखी था. अंग्रेजों के द्वारा श्रीरंगपटना पर कब्जा करने के कारण ही वैभव समाप्त हो गया था. अमृतमहाल नस्ल को अंग्रेजों के द्वारा बरबाद कर दिया गया था.

वर्तमान भारत सरकार ने गोवंश की मूल प्रजाति ही समाप्त कर दी है. 1600 से 1700 तक राजघराने के गोवंश के विकास करने के लिए चिक्का देवराज वोदयार ने अपना योगदान दिया था. दूर दूर से राजघराने के गोवंश को देखने के लिए लोग आते थे.

हैदरअली एवं टीपू सुल्तान के समय में अमृतमहाल, हल्लीकर, कृ-णावल्ली नस्ल का संवर्धन करने के लिए बहुत ही अच्छा कार्य किया गया था.

सुलिया

सुलिया प्राचीन समय में गोचर भूमि पर हरी हरी घांस उत्पन्न कर गोवंश के संवर्धन करने के लिए सक्रिय रही है.

टिपटुर

किसानों के द्वारा कामधेनु, सुरभि, नंदनी, कपिला, बहुला के विकास में सक्रिय भूमिका निभायी है. टिपटुर में भी अमृतमहाल, हल्लीकर तथा अन्य भारतीय गोवंश के संवर्धन करने के कारण ही आर्थिक सम्पन्नता देखने मिल रही थी.

तुमकुर

गोवंश के विकास करने के कारण ही तुमकुर सम्पन्न था. खेती उन्नत ढंग से की जाती थी. किसान भूमि का उपयोग वैज्ञानिक ढंग से करता था.

तुमकुर में अमृतमहाल, हल्लीकर, कृ-णावल्ली नस्ल के विकास करने के लिए समय समय पर विशाल मेले लगाये गये थे.

उडूपी

उडूपी की पहचान सम्पन्नता के कारण है. उडूपी की अपनी विशे-ा शेली है. उडूपी के किसानों ने सक्रियता के साथ कामधेनु के लिए योगदान दिया है.

उडूपी प्राचीन समय से ही नंदनी, सुरभि जेसी दिव्य तथा अदभुत गोवंश के विकास करने के कारण ही आर्थिक रुप से सम्पन्न था.

उलसूर

उलसूर कर्नाटक में गोवंश के विकास करने के कारण ही बहुत ही महतवपूर्ण तथा प्रसिद्ध है.